साना-साना हाथ जोड़ि .....

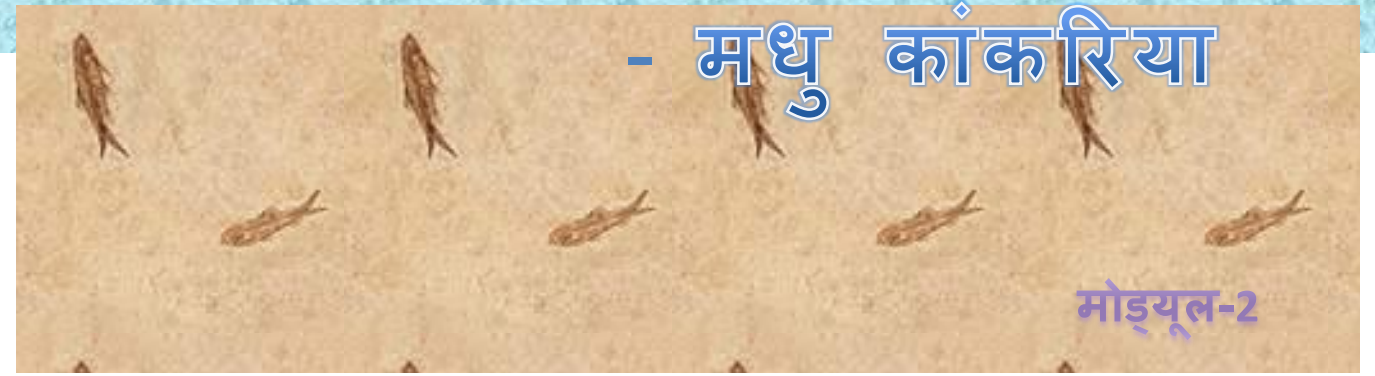

- मधु कांकरिया

मोड्यूल-2

पल-पल परिवर्तित हिमालय के दृश्य

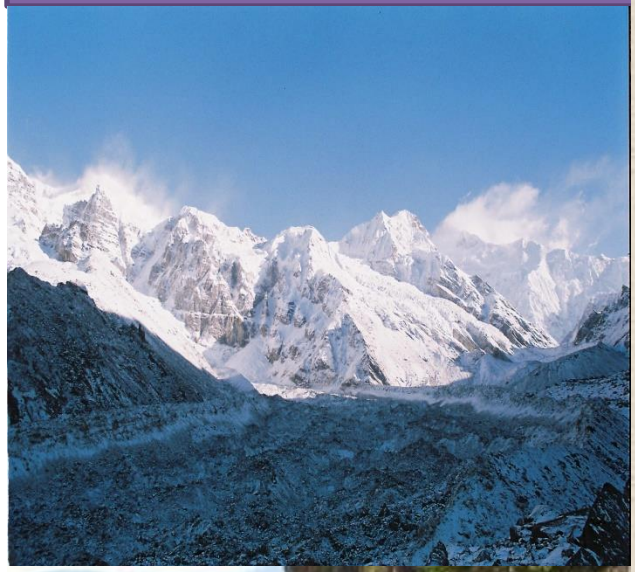

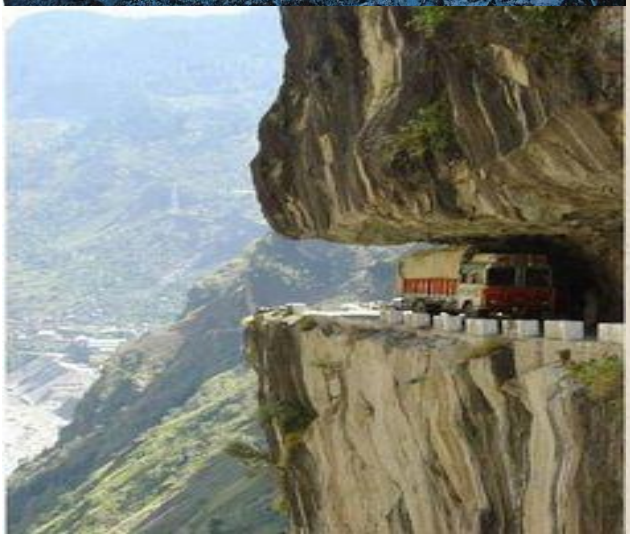

ऊँचाई पर बढ़ते जाने से बाज़ार, लोग और बस्तियाँ पीछे छूट रही थी। अब स्वेटर बुनती नेपाली युवतियाँ और कार्टन ढ़ोते बौने नेपाली बहादुर ओझल हो रहे थे। घर छोटे दिखने लगे थे, पर हिमालय अपने विराट रूप में सामने आने वाला था, वही हिमालय जो पल-पल अपना रूप बदलता रहता था।

अब रास्ते वीरान, सँकरे और घुमावदार होते जा रहे थे और हिमालय विशाल। घटाएँ पाताल को छू रही थीं तथा वादियाँ चौड़ी हो रही थीं। फूल किसी जादू की भाँति मुसकरा रहे थे। इनके बीच से गुज़रना किसी गुफा से गुजरने जैसा था। इस दृश्य ने मन पर ऐसा असर डाला कि मन गा उठा – 'सुहाना सफ़र और ये मौसम हँसी...।'

प्राकृतिक सौंदर्य में डूबी लेखिका

किसी ऋषि की तरह शांत लेखिका सारे परिदृश्य को अपने भीतर समेट लेना चाहती थी। वह आसमान छूते हुए पर्वत शिखर, दूध की धार जैसे गिरते जल-प्रपात, नीचे इठलाकर बहती तीस्ता नदी को देखकर वह अभिभूत हो उठी थी। लेखिका ने इतनी सुंदर नदी पहली बार देखी थी। वह नगपति विशाल को सलामी देना चाह रही थी कि खूब ऊँचाई से गिर रहे 'सेवन सिस्टर्स फाल' नामक झरने के सौंदर्य ने उनका मन इस तरह बाँधा कि सभी सैलानी इस खूबसूरती को अपने कैमरे में कैद करने में व्यस्त थे। लेखिका आदिम युग की राजकुमारी-सी अभिशप्त पत्थरों पर बैठकर बहती जलधारा में पैर डुबोए भीतर तक भीग रही थी। वह अभी यूँ ही बैठी रहना चाहती थी कि जितेन आगे चलने का आग्रह करने लगा। रास्ते में फिर वही आत्मा और आँखों को सुख देने वाले नज़ारे पर अचानक किसी ने जादू की छड़ी घुमा दी हो और सब कुछ बादलों की एक मोटी चादर में ओझल। लेखिका 'माया' और 'छाया' के इस अनूठे खेल को अपनी आँखों में भरती जा रही थी। थोड़ी देर बाद धुंध छँटने पर उसने अपने चारो ओर जन्नत बिखरी देखी। जहाँ तक निगाह जाती थी खूबसूरती ही खूबसूरती नजर आती थी और नज़र आता था कहीं-कहीं लिखा हुआ –थिंक ग्रीन। सतत प्रवाहमान झरने, नीचे धीरे-धीरे बहती तीस्ता नदी, मँडराते बादल, लहराते प्रियुता और रुडोडेंडो के फूलों के सतत प्रवाह में लेखिका को अपना वजूद बहता हुआ लगता है। उसके होठों पर फिर वही सवेरे वाली प्रार्थना गूँजने लगी।

मातृत्व और भ्रम साधना साथ-साथ

कुछ आगे चलने पर लेखिका ने पहाड़ के इस अद्वितीय सौंदर्य के बीच पहाड़ी औरतों को पहाड़ पर बैठकर पत्थर तोड़ते देखा। उनकी कोमल काया पर हाथों में कुदाल और हथौड़े तथा कईयों की पीठ पर बँधी टोकरी में उनके बच्चे भी थे। ऐसे स्वर्गीय सौंदर्य के बीच मौत, भूख और जिंदा रहने की जंग। लेखिका को पता चला कि ये औरतें इन सड़कों को चौड़ा बना रही हैं, जिस पर काम करते कभी जान भी चली जाती है। जरा-सी चूक होते ही सीधे पाताल प्रवेश हो जाता है।

लेखिका को याद आया आदिवासी स्त्रियों का श्रम

लेखिका को याद आया कि एक बार उसने पलामू और गुमला के जंगलों में पीठ पर कपड़े से बच्चे बाँधे पत्तों की तलाश में फिरती आदिवासी स्त्रियों को देखा था, जिनके पैर फूल गये थे। उसने महसूस किया कि हर जगह की कहानी एक-सी ही है। जितेन ने कहा कि मैडम यह देश की आम जनता है, तो लेखिका ने कहा कि ये आम जनता होने के साथ-साथ जीवन का संतुलन भी हैं जो कितना कम लेकर समाज को कितना कुछ देती हैं। तभी लेखिका ने श्रम सुंदरियों की खिलखिलाहट सुनी।

पहाड़ों पर श्रम साध्य जीवन

लगातार ऊँचाइयाँ चढ़ते हुए एक स्थान पर लेखिका ने देखा कि ढ़ेर सारे पहाड़ी बच्चे स्कूल से लौटते हुए उससे लिफ्ट माँग रहे थे, जो तीन-चार किलोमीटर की चढ़ाई चढ़ते हुए स्कूल जाते हैं। जितेन बता रहा था कि ये बच्चे तराई में बने एकमात्र स्कूल में जाते हैं और लौटते समय अपनी मातओं के साथ मवेशियों को चराते हैं, पानी भरते हैं और लकड़ियों के भारी-भारी गट्ठर लाते हैं।

शाम का प्राकृतिक सौंदर्य

आगे जाने पर रास्ता और भी सँकरा और खतरनाक होता जा रहा था, जिन पर जगह-जगह चेतावनियाँ लिखी थीं। इसी रास्ते पर उसने घने-घने बालों वाले याक को देखा जो दूध देता है। अब तक सूरज ढ़लने लगा था। पहाड़ी औरतें गाय चराकर घर लौट रही थीं। चाय के हरे-भरे बागानों में युवतियाँ चाय की पत्तियाँ तोड़ रही थीं। बोकू पहने इस युवतियों का यौवन नदी की भाँति उफ़ान ले रहा था और चेहरा श्रम से दमक रहा था। इधर हरियाली पर डुबते सूरज की स्वर्णिम आभा सतरंगा सौंदर्य रच रही थी। गनगचुंबी पहाड़ों की तली में लायुंग नदी साँस लेती दिख रही थी।

शब्दार्थ

असीम – बहुत दूर-दूर तक फैली हुई, सैलानी –घूमने आने-जाने वाले लोग
मौन – चुप, मुंडकी – शिर, शिखर – चोटी, जल-प्रपात – झरने
कौंध – चमक, पराकाष्ठा – उच्चतम स्तर पर, पुलकित – प्रसन्न, वेग –रफ़्तार
नगपति – हिमालय, लम्हा – क्षण, अभिशप्त – श्राप ग्रस्त, अनमनी – उदास
काव्यमय – कविता गुनगुनाने जैसा, अनंतता – सीमाहीनता, सरहद –सीमा
तामसिकताएँ – तमो गुण से युक्त कुटिल, वासनाएँ – बुरी इच्छाएँ
सयानी – समझदार, उद्घाटन करना – प्रकट करना, श्रेष्ठतम – सबसे बड़ा
जन्नत – स्वर्ग, दुर्लभ – जो अत्यन्त कठिनाई से मिले, सतत – लगातार
प्रवाहमान – बहते रहने वाले, चरैवेति-चरैवेति – चलते रहो, चलते रहो
वजूद – अस्तित्व, एकात्म – मिल-जुलकर, तंद्रिल – नींद भरा आलस्य
नूपुर – घुँघरू, निरपेक्ष – उदासीन, काया – शरीर, दैन्य – दीनता का भाव
जंग – लड़ाई, श्रम-साधना – परिश्रम पूर्ण कार्य, चुहुलबाजी – मजाक करना
दुसाध्य–कठिनता से होने वाले कार्य,डायनामाइट–एक प्रकार का विस्फोटक पदार्थ
ठाठे – कमा करने से हाथ में पड़ने वाली गाँठे, यातना – पीड़ा, वंचना – कमी
सहयात्री – साथ में यात्रा करने वाले, गमगीन – दुखी, मवेशी – जनावर
श्रम-सुंदरियाँ – मेहनत करने वाली औरतें, बर्बीला – बढ़े पेट वाला